

विक्रम संवत्-२०३६, श्रावण सुद्ध-१३, रविवार, ता. २४-८-१९८०
वचनामृत-२८५, २८८. प्रवचन नं. १७

वचनामृत. २८५. कल थोडा चला है, फिरसे लेते हैं. 'यद्यपि...' यद्यपि 'दृष्टि-अपेक्षासे...' सम्यग्दर्शनका विषय तो ध्रुव यीज है. सम्यग्दर्शनकी अपेक्षासे साधकको-धर्मका साधन करनेवालेको 'किसी पर्यायिका या गुणभेदका स्वीकार नहीं है...' आलाहा..! दृष्टि सम्यक्-सत्य दर्शन पूर्णानंदका नाथ प्रभु, उसका सत्य दर्शन अंदर हुआ, इस सत्यदर्शनमें पर्यायिका और गुणभेदका स्वीकार नहीं. वह तो ध्रुवको स्वीकारती है, दृष्टि तो ध्रुवको ही स्वीकारती है. क्योंकि जिसमें अनंत-अनंत गुणोंकी भान-भजना (है), उस ओरकी दृष्टि पर्याय और गुणभेदको भी सम्यग्दृष्टि स्वीकारती नहीं. आलाहा..!

'तथापि...' तो भी 'उसे स्वप्नमें स्थिर हो जानेकी भावना तो वर्तती है.' समकित्तीको तो अंदरमें ही जाना, अंतर आनंदमें ही जानेकी भावना वर्तती है. फिर भी 'रागांशरूप बलिर्भुजता...' समकित्तीको भी राग आता है. पूर्ण वीतराग न हो, तब दृष्टिमें चले तो पर्याय और गुणभेद न हो और दृष्टिमें अकेला ध्रुव ही हो, फिर भी उसे रागांश आता है. 'रागांशरूप बलिर्भुजता उसे दुःखरूपसे वेदनमें आती है...' आलाहा..! सम्यग्दर्शनके विषयमें भगवान आत्मा अतीन्द्रिय आनंदका जहां भान हुआ, मैं तो अतीन्द्रिय आनंदकंड हूं, उसको रागांश आता है, जबतक वीतराग न हो. वह रागांश बलिर्भुज उसे दुःखरूपसे वेदनमें आता है. रागका अंश महाप्रतापि, प्रतापिका विकल्प उठता है, परंतु वेदन दुःखरूप लगता है. आलाहा..! क्योंकि भगवान आत्मा अतीन्द्रिय आनंदका सागर, ऐसा जहां दृष्टिमें आया और उसके ज्ञानमें रागसे प्रज्ञाछैनीसे भिन्न हुआ, तब तो उसके विषयमें पर्याय और गुणभेद है नहीं, फिर भी रागांश आता है वह दुःखका वेदन करते हैं.

समकित्ती श्रेणिक राजा नईमें हैं. सम्यग्दर्शन (है). अनंतानुबंधीका अभाव हुआ ठटना सुभ तो हमेशा है. इसके अलावा तीन कषाय है, उसका दुःख तो है. जितना कषायका अंश है, वह दुःखका ही स्वप्न है. दुःखका वेदन बलिर्भुज रागसे वेदनमें तो आता है. आलाहा..! 'और वीतरागता-अंशरूप अंतर्भुजता सुखरूपसे वेदनमें आती है.' उसी क्षण जो सम्यग्दर्शनमें द्रव्य स्वभावका अनुभव हुआ, उतनी

वीतरागताका अंश सुभङ्ग वेदनमें आता है। अेक क्षणमें सुभङ्ग वेदन स्वसन्मुभताका और उसी समय बलिर्मुभ ङितना राग आता है, उतना दुःभका वेदन अेक समयमें साथमें है। संयोगकी बात यहां नहीं है। प्रतिकूल संयोग है तो दुःभ है अथवा अनुकूल संयोग है तो सुभ है, यह शब्द है ही नहीं। संयोग तो ज्ञेयङ्ग यीज है। अंतरमें प्रतिकूलता मानकर अज्ञानी द्वेष करता है, ज्ञानी प्रतिकूलता देभकर द्वेष नहीं करते। अपनी कमजोरीसे द्वेष आ ङता है। आलाहा..! उसका दुःभका वेदन करते हैं। साथमें वीतराग अंशका भी वेदन है, सुभका भी वेदन है। अतीन्द्रिय यमत्कारिक आनंदका भी अनुभव-वेदन है और साथमें ङितना राग है, उतना दुःभका वेदन है। आलाहा..! 'वीतरागता-अंशङ्ग अंतर्मुभता सुभङ्गसे वेदनमें आती है.'

'जो आंशिक बलिर्मुभ वृत्ति वर्तती हो...' आंशिक बलिर्मुभ वृत्ति वर्तती हो, 'उससे साधक न्याराका न्यारा रहता है।' दृष्टिमें भेदज्ञानकी अपेक्षासे रागसे अंतरमें तो न्यारा रहते हैं। फिर भी राग है उसका वेदन भी है। वेदनसे न्यारे रहते हैं कि यह मेरी यीज नहीं। मैं तो ज्ञान और आनंदस्वङ्ग हूं। फिर भी रागका अंश आता है उसको वेदते हैं। वीतरागता-अंशङ्ग.. आ गया। 'आंशिक बलिर्मुभ वृत्ति वर्तती हो...' आलाहा..! कोई भी बलिर्मुभमें पंच परमेष्ठीको वंदन, भक्ति, श्रवण आदि। श्रवण, मनन, चिंतन, मंथन सब अेक राग है। र्तना तो दुःभवेदन आता है। 'उससे साधक न्याराका न्यारा रहता है।' अंतरमें उससे भिन्न यीज हो गयी है तो भिन्नमें अेकता कभी होती नहीं। पानीके दलमें तेलका बिंदु उपर डालो तो उपर चीकनापन दिभता है। परंतु पानीमें चीकनेपनका प्रवेश नहीं है। पांच-दस शेर पानी हो, उपर तेल डालो तो अंदर प्रवेश नहीं करेगा। क्योंकि दोनोंका स्वभाव भिन्न है।

अैसे भगवान आत्मा आनंद (पानी) समान, अंदर राग तेल समान और अंदर पानी आनंद समान। दोकी भिन्नता रहती है। राग उपर ही उपर तैरता है। पानीके उपर तेलका बिंदु उपरका उपर रहता है। वैसे भगवान आत्माके आनंदके उपर राग रहता है, अंदर प्रवेश नहीं करता। फिर भी वेदन भी है। आलाहा..! क्योंकि वह कोई परयीज नहीं है। परयीजको तो छूता नहीं, परंतु अपनेमें अपनी कमजोरीसे रागादि, द्वेषादि आया उसका वेदन भी है। दुःभ भी है। आलाहा..! संयोगको दुःभ कला नहीं, संयोगको सुभ कला नहीं। संयोगी यीज तो बिलकुल पर है, उसको तो आत्मा छूता भी नहीं। कभी आत्मा अपने सिवा, परपदार्थ कर्मसे लेकर शरीर, वाणी, मन, स्त्री, कुटुंब-परिवार किसीको आत्मा अनंत कालमें कभी

स्पर्शा ही नहीं। लेकिन अपनी पर्यायमें कमजोरीसे जो राग आता है, उसका वेदन करते हैं। वीतरागता है उतना आनंद है, राग है उतना दुःख है। वह तो अपनी-अपनी पर्यायमें है। परके साथ संबंध नहीं है। आह्लाहा..!

‘आंभमें किरकिरी नहीं समाती...’ आंभमें रजकण नहीं समाता। यहां किरकिरी शब्द आपका हिन्दीमें है। हमारे यहां कहते हैं, आंभमें कणिका-कणिका, रजकण या तिनका, तिनका अंदर नहीं समाता। अंदर आवे तो भी बाहर निकाल देता है। अंदर नहीं जा सकता। आह्लाहा..! **‘आंभमें किरकिरी नहीं समाती उसी प्रकार चैतन्यपरिणतिमें...’** आह्लाहा..! भगवान आत्माकी निर्मल परिणतिमें **‘विभाव नहीं समाता.’** विभाव उसमें अंदर अकड़प नहीं होता। उपर-उपर तिरता है। आह्लाहा..! ऐसा मार्ग प्रभुका।

तीन लोकके नाथ सर्वज्ञ भगवानकी यह वाणी है। बहिनको अंदरसे आयी है, वह बोले हैं, और विभ लिया है। वे तो आनंदमें रहते हैं, अतीन्द्रिय आनंदमें रहते हैं। लेकिन ऐसा थोड़ा बोले होंगे तो विभ लिया है। आह्लाहा..!

कहते हैं, जैसे **‘आंभमें किरकिरी नहीं समाती उसी प्रकार चैतन्यपरिणतिमें...’** भगवान चैतन्यकी पर्यायमें चैतन्यवस्तु जो पदार्थ अनादि सत् सत्ता, सत् सत्ता, सत् परमेश्वर परम स्वरूप, उसमें **‘चैतन्यपरिणतिमें विभाव नहीं समाता.’** चैतनमें तो नहीं (समाता), लेकिन चैतन्यकी परिणतिमें विभाव नहीं समाता। आह्लाहा..! क्या कहा? चैतन जो द्रव्य है उसकी तो बात ही क्या करनी? उसमें तो केवलज्ञान भी नहीं जाता। ये तो अपनी जो चैतन्यकी निर्मल परिणति प्रगट लुयी, सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र्यकी निर्मल दशा, उसमें विभाव नहीं समाता। आह्लाहा..! तेवका बिंदु जैसे पानीमें उपर रहता है, वैसे चैतन्यपरिणतिसे राग उपर रहता है। राग और परिणति दो अंक नहीं होते, कभी तीन कालमें साधकको। यह साधक। आह्लाहा..!

वीतराग सर्वज्ञदेव त्रिलोकनाथका यह कथन है। दिव्यध्वनिका सार यह है। आह्लाहा..! तेरी शीर्षमें तो राग और विभाव नहीं समाता, परंतु तेरी चैतन्यकी परिणति तुझे लुयी-धर्म दशा, उसमें भी राग समाता नहीं। क्योंकि वह वीतरागभाव है। धर्म है वह वीतरागभाव है। वस्तु वीतरागमूर्ति है, चैतन्य वीतरागमूर्ति है। उसके अवलंबनसे वीतरागपरिणति लुयी, वह धर्म है। उसमें रागादिका प्रवेश नहीं होता। आह्लाहा..! अरे..! यौरासीके अवतार करके अनंत अवतार हो गये, प्रभु! मान बैठा, कुछ नहीं था और मान बैठा कि मैं कुछ धर्म करता हूं। अंदर तो सब शल्य पड़े हैं। आह्लाहा..! ऐसे अनंताअनंत भव किये, परंतु चैतन्यकी परिणति निर्मलानंद

है वह प्रगट नहीं की. और वह प्रगट करे तो साथमें राग आता है, उसका भी परिणतिमें प्रवेश नहीं होता. तो पूरी दुनिया तो दूर रह गयी. स्त्री, कुटुंब, परिवार, धंधा-व्यापार उसको तो आत्माकी रागकी परिणति भी छूती नहीं. क्या करते हैं? आत्माके सिवा सब चीज, उसको रागकी मंदता आती है, वह परिणतिको छूती नहीं तथापि वह राग परद्रव्यको छूता नहीं. आह्लाहा..! ऐसा प्रभुका मार्ग है.

रागकी दशा धर्मीजिवको धर्म परिणति प्रगट हुयी, वह तो वीतराग दशा है. वीतराग दशामें राग आता नहीं. परंतु राग आये बिना रहता नहीं. परंतु रागपरिणतिसे भिन्न रहता है. अरे..! प्रभु! वह राग परिणतिसे तो भिन्न (रहता है), लेकिन राग पूरी दुनियाके संयोगसे भी भिन्न (रहता है). दुनियाकी कोई चीजको राग छूता है.. आह्लाहा..! गजब, प्रभु! ऐसी बात अंतरमें बैठनी और उसका परिणामन होना, वह बात अलौकिक बात है. आह्लाहा..!

भगवान त्रिलोकनाथकी दिव्यध्वनिमें आया, गणधरोंने सुना, ईन्द्रोंने सुना, उसमेंसे यह सब बात आयी है. आह्लाहा..! 'आंभमें किरकिरी नहीं समाती उसी प्रकार चैतन्यपरिणतिमें विभाव नहीं समाता. यहि साधकको बाह्यमें-प्रशस्त-अप्रशस्त रागमें..' आह्लाहा..! साधकको शुभ-अशुभरागमें 'दुःख न लगे और अंतरमें-वीतरागतामें-सुख न लगे तो वह अंतरमें क्यों जाये?' आह्लाहा..! क्या करते हैं? बहिर्मुख दृष्टि कुछ भी चलो, दया, दान, व्रत, भक्ति आदि कोई भी परिणाम, वांचन, श्रवाण, मनन. वांचन, श्रवाण, मनन, चिंतवन, मंथनके विकल्पमें दुःख न लगे... आह्लाहा..! और अंतरमें सुख न लगे तो अंतरमें क्यों जाये? क्या आया, समझमें आया? भगवान आत्मा सच्चिदानंद प्रभुमें सुख न लगे, वेदनमें, हां! पर्यायमें. वेदनमें पर्यायमें सुख न लगे और रागमें दुःख न लगे तो वह आत्मा अंतरमें क्यों प्रवेश करे? रागसे भी हटकर अपनी परिणति अंतरमें ले जाते हैं. आह्लाहा..! ऐसा मार्ग (है).

प्रभुनो मार्ग छे शूरानो, कायरना नहि काम. वीरनो मार्ग छे शूरानो. अंतरमें वीर्यकी रचनामें तो आत्माकी रचना हो उसका नाम वीर्य करते हैं. भगवानने समयसारमें ४७ शक्तिका वर्णन किया. उसमें अेक वीर्य-बल शक्ति ली. वीर्य शक्ति क्या करती है? कि धर्म दृष्टि सम्यग्दर्शन हुआ तो सब गुणकी रचना, अनंत गुणकी व्यक्तताकी रचना करे उसका नाम वीर्य और वीरता कहनेमें आती है. आह्लाहा..! वह वीर्य स्वप्नकी रचना करे. रचना यानी गुणकी, द्रव्यकी नहीं. गुण-द्रव्य तो ध्रुव है. आह्लाहा..! परंतु ध्रुव पर नजर जाने पर ध्रुवका स्वीकार होनेसे ध्रुवमें जो वीर्य है वह अपनी

निर्मल परिष्ठातिकी रचना करे. रागकी रचना वीर्य नहीं करता. समझमें आता है? स्वर्पकी रचना.. ४७ शक्तिमें आता है. शब्द यही है.

वीर्यगुण यानी स्वर्पकी रचना करे वह है उसमें, है. छटा बोल है. 'स्वर्पकी (-आत्मस्वर्पकी) रचनाकी सामर्थ्यरूप वीर्यशक्ति.' ४७ शक्ति. ऐसी अनंत शक्ति है. यहां तो ४७ शक्तिमें एक वीर्य शक्ति ली है. वीर्य जो पुत्र-पुत्री हो वह रेत-वीर्य नहीं. वह तो धूल है. आलाला..! अपना वीर्य इसको प्रभु कहते हैं कि आत्मस्वर्पकी, वह शब्द कोष्ठकमें है, मूल शब्द स्वर्प है. 'स्वर्पकी रचनाकी सामर्थ्यरूप वीर्यशक्ति.' आलाला..! देओ! संस्कृत पाठ है. 'स्वरूपनिर्वर्तनसामर्थ्यरूपा वीर्यशक्ति।' संस्कृतमें है. 'स्वरूपनिर्वर्तनसामर्थ्यरूपा'. आलाला..! स्वर्पको उत्पन्न करनेवाली ऐसी वीर्यशक्ति. आलाला..! 'सामर्थ्यरूपा' अपने सामर्थ्यसे वीर्य अपने स्वर्पकी पर्यायमें रचना करता है, निर्मल वीतरागता प्रगट करता है, निर्मल आनंद और शांति प्रगट करता है, उसका नाम वीर्य है. जो वीर्य शुभ-अशुभ करे, उस वीर्यको नपुंसक कहा है. पुण्य-पाप अधिकार और अशुभ अधिकार, दो जगह (आया है). शुभभाव करनेवालेको नपुंसक-कवीव कहा है. संस्कृत शब्दमें कवीव है. कवीवका अर्थ नपुंसक है. आलाला..! गजब बात है! गजब बात!! प्रभु! लोगोंने बाहरमें मान लिया. समझमें आया?

यहां कहते हैं, वीर्यशक्ति उसको कहना चाहिये कि स्वर्पकी रचना करे. उसमें-रागमें दुःख न लगे और आनंदमें सुख न लगे तो प्रभु अंदरमें कैसे जाये? वह तो बाहर रजसता है. राग-बाहरमें हीक लगता है, शुभ और अशुभरागमें रहता है, रजसता है, बनाता है, रचता है और उसमें भुश होता है, शुभ-अशुभ वीर्य, वह वीर्य नहीं. आलाला..!

यहां कहते हैं, सुख न लगे-आत्माके आनंदमें सुख न लगे और रागमें दुःख न लगे तो 'वह अंतरमें क्यों जाये?' वह अंतरमें कैसा जा सकेगा? आलाला..! 'कहीं रागके विषयमें 'राग आग दहै' ऐसा कहा हो,...' छ ढालामें. छ ढालामें 'राग आग दहै दहै सदा' राग आग दहै दहै सदा. छ ढालामें है. आलाला..! राग दहै दहै सदा. चाहे तो शुभराग दया, दान, भक्ति, व्रत, ब्रह्मचर्यके विकल्पमें शुभराग हो, आलाला..! राग दहै दहै सदा. रागर्पी दहै-अग्नि आत्माको जलाती है. आलाला..! शुभराग भगवानकी शांति, आनंदका भान हुआ फिर भी कमजोरीमें जो राग आता है, वह राग दहै-अग्नि समान है. आलाला..! राग आग दहै सदा. ऐसा कहा है. कहीं प्रशस्त रागको आग कहा, छ ढालामें. रागको आग कहा है,

छ ढावामें. और विषकुंभ कला है, समयसारमें. समयसारके मोक्ष अधिकारमें शुभभावको ऊहरका घडा (कला है). आलाला..! विषकुंभ मूल पाठ है. पुण्य और पापका भाव दोनों ऊहरका घडा है. आलाला..! गजब बात है! आदमीको कहां जना? पूरे दिन घंघा करना... मार्ग बापू! बहुत अलग प्रकारका है.

यहां बहिन कहते हैं, 'कहीं रागके विषयमें 'राग आग दहै' ऐसा कला हो, कहीं प्रशस्त रागको...' प्रशस्त, हां! शुभरागको 'विषकुंभ' कला हो...' मोक्ष अधिकारमें. आलाला..! 'थाहे जिस भाषामें कला हो, सर्वत्र भाव अेक ही है...' सर्वत्र भाव (यही है कि) राग दुःख ही है. किसी भी प्रकारका राग-शुभराग. आलाला..! रागके पीछे अंदर वीतरागमूर्ति भगवान विराजता है. उसकी दृष्टि और अनुभव हुआ, बादमें जितना राग हो, लेकिन सब दुःखरूप लगता है. आलाला..! 'थाहे जिस भाषामें कला हो, सर्वत्र भाव अेक ही है...' क्या? 'कि-विभावका अंश वह दुःखरूप है.' आलाला..! विभावका अंश दुःखरूप ही है. मोक्ष अधिकारमें भगवान कुंदकुंदाचार्यने विषका घडा-विषकुंभ कला है. क्योंकि अेक ओर प्रभु है वह अमृतका सागर है. अतीन्द्रिय आनंदका सागर, उसके आगे रागका कण ऊहर समान, ऊहरके प्याले समान है. आलाला..! उस रागसे आत्माको लाभ होगा, रागकी क्रिया करो, करते-करते लाभ होगा, वह मिथ्यात्व है, प्रभु! मानो, मनानेवाले मिलेंगे. वस्तु यह है. आला..!

त्रिलोकनाथके इरमानमें, सीमंधरप्रभुके पाससे यह बात आयी है. बहिनके हृदयमें जतिस्मरणमें ऐसा आया है. आलाला..! असंख्य अरब वर्षोंका जतिस्मरण बहिनको प्रत्यक्ष है. नौ भव. वहांका तो बहुत याद है. कभी-कभी तो ध्यानमें भूल जाते हैं, मैं महाविदेहमें हूं कि भरतमें हूं, भूल जाते हैं. बाहरमें बहुत प्याल करे तो (मावूम पडे कि) ओलो..! भरतक्षेत्रमें हूं. भगवानके पास यह सब बात सुनी है. आलाला..! वह बात यह है.

'विभावका अंश वह दुःखरूप है. लवे ही उच्यमें उच्य शुभभावरूप...' उच्य शुभभाव हो, तीर्थकरगोत्र बांधनेका, आहारक शरीर बांधनेका, यशकीर्ति बांधनेका, पुण्य बांधनेका किसी भी प्रकारका राग हो. 'या अतिसूक्ष्म रागरूप...' अतिसूक्ष्म राग, सूक्ष्म. अंतरमें सूक्ष्म रागसे भिन्न करके सूक्ष्म राग होता है, तब उससे भेदज्ञानमें भिन्नता करते हैं. ऐसा सूक्ष्म राग हो, 'तथापि जितनी प्रवृत्ति उतनी आकुलता है...' आलाला..! भगवान तो अंदर निवृत्तस्वरूप प्रभु है. हिले नहीं, चले नहीं, विकल्प आवे नहीं. आलाला..! ऐसी बात है.

यह पुस्तक पढ़कर तो अन्यमति भुश हो जाते हैं. कुदरती ऐसी बात बाहर आ गयी है. अकदम बाहर आ गयी. बलनोंने विभ विया, वह भी किसीको मावूम नहीं था. कब बोले और कब विभ विया, मावूम नहीं. मैंने तो कहा था, जिन्होंने विभ विया था, रामज्जुभाईको कहा, जिन्होंने विभा उन्हें कुछ दो. तो प्रत्येकको सौ रुपयेका चांदिका बलिनके झोटो सहित (दिया). पैसेकी क्या किमत है. आला..! यहां तो बोले तो रुपयेका ढेर हो जायेगा. बलिन वधायेंगे, ८०००० तो कमसे कम आयेंगे. इस बुधवारको बलिनका जन्मदिन है. कमसे कम ८००००. उससे भी बढ़ेंगे. उसमें क्या? उसकी क्या किमत है. आलाला..!

चीज तो यह है. 'जितनी प्रवृत्ति उतनी आकुलता है...' आलाला..! प्रभु निवृत्तस्वर्ष अतीन्द्रिय आनंदका धाम, उस क्षेत्रसे-उस धामसे हटकर कुछ भी रागांश आवे, सब आकुलता है. आलाला..! 'और जितना निवृत्त होकर...' रागसे निवृत्त होकर आनंदप्रभुमें विराजता है, जितना स्थिर होता है, पर्यायसे हां, ध्रुवमें तो कोई हिलना-डुलना है नहीं. पर्याय अंदरमें स्थिर होती है उतने अंशमें अतीन्द्रिय आनंदके धाममें वर्तमान पर्यायका अंश जितना उसमें निवृत्त होकर वर्तता है, 'स्वर्षमें वीन हुआ उतनी शांति...' आलाला..! 'अवं स्वर्षानंद है.' आलाला..! मुझे मावकी रकम है, बापू! 'उतनी शांति अवं स्वर्षानंद है.'

ज्ञानी ज्व निःशंक तो र्तना होता है कि सारा ब्रह्मांड उलट जाये तब भी स्वयं नहीं पलटता; विभावके चाहे जितने उदय आयें तथापि यलित नहीं होता. बाहरके प्रतिफल संयोगसे ज्ञायकपरिणति नहीं बढलती; श्रद्धामें डेर नहीं पडता. पश्चात् कमशः यारित्र बढता जाता है.

२८८.

२८८. पासमें ही है, सामने. २८८. 'ज्ञानी ज्व...' आलाला..! अनुभवी.. कहा था न? ८० साल पहले. अब तो ८१ वर्ष हुआ. १०-११ वर्षकी उम्रमें हमारे पडोसी, हमारी मांके मायकेके ब्राह्मण थे. उसे हम मामा कहते थे. मूलज्जु मामा. पडोसमें रहते थे, अकेले रहते थे. स्त्री-पुत्र नहीं थे. भुंगवी, भावनगरके पास भुंगवी है. हमारी मांका ननिलाल भुंगवी था. वह नलाकर-स्नान करके बोलते थे, अनुभवीने अटवुं रे आनंदमां रहेवुं रे, भजवा परिब्रह्म ने बीजूं कांई न कहेवुं रे...

मामा यह क्या बोलते हैं? हम तो बालक थे, ११ वर्षकी उम्र. उनको भी कुछ मालूम नहीं था. 'अनुभववीने अटवुं रे आनंदमां रडेवुं रे...' उतारा है, दरबारी उतारा है उसमें कारकून थे. बडा कारकून था. हमारे मकानके साथ ही उनका मकान था. अकेले रहते थे. नहाकर रोज बोलते थे. मालूम कुछ नहीं. आलाला..!

यहां तो कलते हैं, अनुभववीको, आत्माका अनुसरण करके अनुभव करनेवाला समकित्ती, उसको आनंदमें रहना. अतीन्द्रिय आनंद पर्यायमें प्रगट होता है. भजवा परिब्रह्म. परिब्रह्म अर्थात् आत्मा. उन लोगोमें ईश्वर कलते हैं. परिब्रह्म, उनको भजना. अन्यमति. यहां तो परिब्रह्म अर्थात् आत्मा. परि-समस्त प्रकारसे ब्रह्म-आनंदकी मूर्ति प्रभु. 'भजवा परिब्रह्मने बीजुं कांई न कलेवुं रे...' परिब्रह्म प्रभु ऐसा भगवान, आनंदमें रहनेसे दूसरी कोई चीज उसको लागू पडती नहीं. बाहरकी कोई चीजको वह छूता नहीं. आलाला..! ऐसा आत्मा..

'ज्ञानी जव निःशंक तो ईतना होता है...' २८८ है न? ईतना निःशंक, निर्भय, निडर होता है. धर्मीजव पूरी दुनियासे बेदरकार रहते हैं. कौन क्या मानता है, कौन क्या मानता है, उसकी उसे दरकार नहीं है. ज्ञानी जव-धर्मी जव 'निःशंक तो ईतना होता है कि सारा ब्रह्मांड उलट जाये...' आलाला..! सारा ब्रह्मांड विपरीत हो जाये. उलट जाये यानी विपरीत हो जाये. 'तब भी स्वयं नहीं पलटता;...' जो अपनी चीज है उसमेंसे क्यों पलटे? पाताल मिल गया, पातालमें-पर्यायके पातालमें भगवान था, वह मिल गया. चौद ब्रह्मांड पलटे, लेकिन वह पलटता नहीं. 'तब भी स्वयं नहीं पलटता; विभावके चाहे जितने उदय आयें...' आलाला..! धर्मीको भी विभाव तो आता है. वासना विषयकी, क्रोधकी, मानकी, माया, लोभादि रागादि. 'विभावके चाहे जितने उदय आयें तथापि चलती नहीं होता.' स्वप्नमेंसे चलित नहीं होता. उसका ज्ञाता-दृष्टा रहता है. आलाला..! राग और आत्माका आनंद दोनों चीज, जैसे अग्नि और पानी दोनों चीज भिन्न, और भिन्न स्वभाव (है), दो चीज भिन्न और भिन्न स्वभाव (हैं), जैसे भगवान और राग भिन्न और भिन्न स्वभाव (हैं). आलाला..! ऐसी बातें हैं, प्रभु! सुने तो सही कि करना तो यह है. निर्णय तो करे. भले विकल्पसे पहले निर्णय करे कि करना तो यह है. ईसके बिना कभी जन्म-मरणका अंत आयेगा नहीं और भवभ्रमणमें कहां जाना? आलाला..! यौरासीके अवतार. आलाला..!

यहां अक जिसकोली थी. जिसकोलीको क्या कलते हैं? गिलहरी. अंदरमें अक थी, गिर गयी. निकलने गयी, लेकिन वहां छेद था तो उसमें घुस गयी. छेदमें

घुस गयी और वहां मर गयी. आलाला..! उसे ऐसा था कि यह बचनेका साधन है. बडा छेद था, उसमें चली गयी. आलाला..! जैसे बेचारी गिर गयी, गिरकर (भागनेका) प्रयत्न करती थी. उसे कोई निकालने गया, निकालने गया तो उसे अकदम लय लगा. अंदर छेद था उसमें घुस गयी. मर गयी. वहांसे निकली नहीं. आलाला..! जैसे दुःख तो प्रभु! साधारण है. आलाला..!

धंधुकामें अभी थोडा साल पहले मुसलमानोंने एक गायको सजकर गांवमें घुमाया. इरि घर ले गये. घर जाकर उसके टूके कर दिये. टूके करके अपनी ज्ञातिमें बांटे. धंधुकामें. २५-३० साल हुआ.

मुमुक्षु :- हिन्दीमें इरमाईअ.

उत्तर :- हिन्दीमें नहीं आया? हमको मालूम नहीं पडता, हिन्दी है कि गुजराती? धंधुका है न धंधुका? उसमें एक बार मुसलमानोंने ऐसा किया था, २५-३० साल या ५०-६० साल हो गये. बहुत साल हो गये. यहां तो ८१ वर्ष हुआ. कलके भांति बात याद आये. मुसलमानोंने गायको सजकर गांवमें घुमाया. हिन्दु लोगोंने थोडा दुःख लगे तो ठीक. घुमाकर बादमें घर ले गये. टूके-टूके कर दिये. धंधुका. कौन पूछता है? सरकारमें कोई शिकायत चलती है? जिंदा गायके टूके. आलाला..! ऐसा तो अनंत बैर हुआ है, प्रभु! एक बार नहीं. यह तो सुना है वह बात कही.

अरे..! हमारे नारणभाई कहते थे, पोस्ट मास्टर थे न. हमारे पास टीका ली थी. वे कहते थे, उनका एक पारसी मित्र था. उसके पास कोई कारणसे गया था. वहां सुवरके पैरको सवियेसे बांधते थे. बांधकर उसे जिंदा अग्निमें डाला. जिंदा सुवर. आलाला..! ऐसी वेदना कितनी बार हुयी है, प्रभु! भूल गया. वर्तमानमें थोडी अनुकूलता मिली तो घुस गया. आलाला..! जैसे दुःख तो अनंत बैरे (सले).

यहां कहते हैं, ज्ञानीको 'विभावके चाहे जितने उदय आयें..' ज्ञानीको रागादिका उदय तो आता है. आलाला..! द्वेष आये, राग आये, विषयवासना आ जाय. समकित्तिको पंचम गुणस्थानमें होता है. आलाला..! क्योंकि चौथे, पांचवे गुणस्थानमें आत्मज्ञानमें रौद्रध्यान भी कहा है. रौद्रध्यान. छठे गुणस्थानमें नहीं होता. मुनि होते हैं उनको आर्तध्यान होता है. रौद्रध्यान नहीं होता. जैसे समकित्तिको भी रौद्रध्यान होता है तो यहां कहते हैं, 'चाहे जितने उदय आयें तथापि चकित नहीं होता.' आ जाओ. मेरी कमजोरी है. मेरी चीज नहीं. मेरी चीजमें वह नहीं है. आलाला..! कठिन बात है. 'जितने उदय आयें तथापि चकित नहीं होता.'

‘बाहरके प्रतिकूल संयोगसे ज्ञायकपरिणति नहीं बढवती;...’ आलाला..! शक्करकी डली हो. चाहे जिसमें डालो तो वह शक्कर स्वयं ऊहर नहीं होगी. शक्कर स्वयं मैल नहीं होगी. शक्कर तो शक्करके पानीड़प होगा. वैसे भगवान आत्मा अतीन्द्रिय आनंदकी शक्करकी डली,.. आलाला..! उसमें अेकाग्र होकर, उसका प्रवाल चलता है. आलाला..! शक्करका जितना प्रवाल है वह मीठा प्रवाल है. आसपासमें चाहे जितना मैल हो, मीठा प्रवाल कभी छूटता नहीं. आलाला..! जैसे भगवान आत्मा अपना आनंदकी दृष्टिमें उदय कोई भी आवे, तथापि चलित नहीं होता. आलाला..! भाषा आसान है, प्रभु! भाव बहुत अंदर (गंभीर है). भावका पलटा मारना.. दूसरी सब किया कर सकते हैं, नय्य हुआ, अनंत बार मुनिपना लिया, अष्टाईस मूलगुण पावे, पंच महाव्रत पावे, वह राग था, ऊहर था. आलाला..!

धर्मी जव अपने आनंदके स्वादके आगे नित्यानंदके अवलंबनके आगे कोई भी प्रतिकूलता आवे तथापि चलित नहीं होता. ‘बाहरके प्रतिकूल संयोगसे ज्ञायकपरिणति नहीं बढवती.’ आलाला..! श्रेणिक राजने जेवमें ऊहर पिया. नर्कका आयुष्य बंध गया था. नहीं तो समकित्ती नर्कमें नहीं जाता. परंतु पहले नर्कका आयुष्य बंध गया था. बादमें क्षायिक समकित हुआ. आलाला..! उसमें उसका पुत्र आया. स्वयंने ऊहर जा लिया. आलाला..! फिर भी क्षायिक समकितमें बाधा नहीं आती. वह भाग और चैतन्यका भाग दोनों भिन्न रहते हैं. आलाला..!

‘संयोगसे ज्ञायकपरिणति नहीं बढवती;...’ चाहे जैसे संयोग आवे, लेकिन उसकी परिणति अर्थात् पर्याय चलती नहीं, बढवती नहीं. परके साथ अेकड़प परिणामती नहीं. चैतन्यकी परिणति और राग, दोनों कभी अेकड़प नहीं होते. ‘श्रद्धामें डेर नहीं पडता.’ चाहे जितना राग आवे, विभाव आवे,... आलाला..! माथा झोडा, ऊहर पिया, फिर भी क्षायिक समकित (है). भले गये नर्कमें. ईस कारणसे नहीं, पहले नर्कका आयुष्य बंध गया था. आयुष्य बंध गया उसमें डेरकार नहीं होता. डेर उतना पडता है, लडु बनाया हो, लडु, उसमें थोडा घी डाले. दो-चार उस लडुको सूभने दे. वैसे पूर्वका आयुष्य बंधा हो उसमें कुछ घट भी जाय, कुछ बढ भी जाय. आयुष्यमें डेरकार नहीं होता. आलाला..! आयुष्य तो वहां भोगना ही पडे. आलाला..! नर्कका आयुष्य बंध गया था, तैतीस सागरका. स्थिति घट गयी, चौरासी एगार वर्षकी रही. चौरासी एगार वर्षकी रही. आलाला..!

अेक क्षणका दुःख भगवान रत्नकरंड श्रावकाचारमें कलते हैं, उस दुःखको प्रभु, क्या कहे? कोड भवमें और कोड जेभसे अेक क्षणके दुःखका वर्णन नहीं हो सकता.

आलाला..! जैसे उसकी महिमाका पार नहीं, वैसे उसे दुःखका पार नहीं. आलाला..! जैसे दुःखमें तैंतीस-तैंतीस सागर. एक बार नहीं, अनंत बार गया. भूल गया. वहां कितना दुःख था. एक लाख मण्डका लोहेका गोला हो, टीप-टीपकर मजबूत किया हो. उस लाख मण्डके गोलेको सातवीं नर्कमें ले जायें तो जैसे पारा पीघल जाता है, वैसे वह लाख मण्डका गोला पीघल जाता है. उतनी तो वहां ठंडी है. ऐसी ठंडमें जो व तैंतीस सागर निकालता है. जैसे अनंत भव किये. आलाला..!

यहां तो साधारण कुछ मिले तो अभिमान हो जाये. मैं धतना पढा हूं, मैं ऐसा अधिकारी हूं, अमलदार हूं, कार्यकर्ता हूं. कर्ता है. आलाला..! प्रभु! कर्ता तो ना कलते हैं, प्रभु! कोई किसीका कुछ कर सकता नहीं. आलाला..! व्यवस्थापक व्यवस्था करते हैं, सब बूठ है. व्यवस्थापक ऐसा कहे कि यह व्यवस्थाका आदमी है, उसे आगे कार्यभार सौंपो. व्यवस्था तो उस समय जो होनेवाली है वह होगी, होगी और होगी ही. व्यवस्थापकसे कुछ इरकार होता नहीं. आलाला..! अरेरे..! कैसे बैठे?

मुमुक्षु :- अभिमान तो होता है न.

उत्तर :- अभिमान होता है कि मैंने किया. मेरी उपस्थितिमें यह सब सुधर गया. मेरी लाजरीमें सब पलट गया. कौन पलटे? प्रभु! जगतकी चीज तो उसके कारण उस समय कमबद्ध, कमबद्ध-जिस समय जो परिणाम जिस द्रव्यमें जिस प्रकारसे होनेवाला है, वह होगा, होगा और होगा. कमबद्ध. अकेके बाद अके, अकेके बाद अके होनेवाला है. आगेपीछे कभी नहीं होता. कोई द्रव्यका परिणाम आगेपीछे नहीं होता. यह परिणाम अभी पंद्रहवे नंबरमें है, उसे पच्चीसवे नंबरमें ले जाओ. आलाला..! अनंत आत्मा और अनंत परमाणु, प्रत्येककी समय-समयमें जो पर्याय कममें होनेवाली है वह होती है. ज्ञानी उसको जानते हैं, उसके कर्ता होते नहीं. आलाला..! ऐसी बात है. आया न? २८८.

‘ज्ञायकपरिणति नहीं बढती; श्रद्धामें इरे नहीं पडता. पश्चात् कमशः चारित्र बढता जाता है.’ चारित्रमें दोष है. लेकिन वह इरकार यवा जायेगा. चारित्रका दोष धीरे-धीरे निकल जायेगा और पूर्ण चारित्र प्राप्त कर, केवलज्ञान प्राप्त कर मोक्षमें ही जायेगा. क्योंकि मूल पकड लिया है. मूल चैतन्यद्रव्य पकड लिया है. वृक्षका मूल पकड लिया है तो उसका इल, इल तो आयेगा ही. आलाला..! जैसे भगवान आत्मा ध्रुवको जिसने पकड लिया, उसे केवलज्ञान आदि इल, इल तो आयेगे ही. बाहरकी प्रतिकूलतासे चलता नहीं. चारित्रमें दोष लगता है. ‘पश्चात् कमशः चारित्र बढता जाता है.’ स्वप्नमें रमणता बढती जाती है. समकित तो है, उस ओरका पुरुषार्थ

तो है ली. वल करते-करते यारित्र बढ ज़येगा, केवलज्ञान लो ज़येगा. लेकिन प्रतिकूलतामें दुःभका वेदन है, परंतु वल अपना है, अैसा मानते नलीं. वल पर चीज है, मेरी कमजोरीसे लोती है, अैसा करके उसको निकाल देता है और बिन्न रहता है. विशेष कहेंगे...

(श्रोता :- प्रमाण वचन गुरुदेव!)